ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in January 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

विश्व अर्थशास्त्र में महत्वपूर्ण तत्व पर एक अध्ययन: भारतीय विदेश नीति

Dr. Rekha Rani, Bulandshahr Uttar Pradesh India, Email - rs.9897128444@gmail.com

1.0 परिचय

भारतीय विदेश नीति अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने और वैश्विक मंच पर अपने लक्ष्यों को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा अपनाए गए सिद्धांतों, रणनीतियों और कार्यों को संदर्भित करती है। भारत की विदेश नीति पिछले कुछ वर्षों में विकसित हुई है, जो इसके ऐतिहासिक अनुभवों, भू-राजनीतिक विचारों, आर्थिक हितों और सांस्कृतिक संबंधों से आकार लेती है।

भारत की विदेश नीति के उद्देश्यों में राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करना, आर्थिक विकास को बढ़ावा देना, क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता को बढ़ाना और अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में एक प्रमुख शक्ति के रूप में अपनी स्थिति को आगे बढ़ाना शामिल है। भारत सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखना चाहता है और गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाना चाहता है, जिसका अर्थ है कि यह खुद को किसी भी प्रमुख शक्ति गुट के साथ संरेखित नहीं करता है।

भारत की विदेश नीति पारंपरिक रूप से शांति, विकास और मानवाधिकारों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता से प्रेरित रही है। इसने विभिन्न द्विपक्षीय और बहुपक्षीय मंचों के माध्यम से अन्य क्षेत्रों और देशों के साथ जुड़ते हुए दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय एकीकरण और सहयोग को बढ़ावा देने की मांग की है। भारत संयुक्त राष्ट्र, राष्ट्रमंडल और गुटनिरपेक्ष आंदोलन सहित कई क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का संस्थापक सदस्य है।

2.0 भारतीय विदेश नीति की परिभाषा

"भारत अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभर रहा है, और इसकी विदेश नीति आत्मविश्वास और मुखरता की बढ़ती भावना को दर्शाती है।" - सुमित गांगुली, इंडियाना यूनिवर्सिटी ब्लूमिंगटन में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर हैं।

"भारत की विदेश नीति व्यावहारिकता, आदर्शवाद और रणनीतिक हेजिंग के मिश्रण की विशेषता है, क्योंकि यह विभिन्न हितों को संतुलित करने और एक जटिल वैश्विक वातावरण को नेविगेट करने का प्रयास करती है।" - एलिसा आयरेस, काउंसिल ऑन फॉरेन रिलेशंस में भारत, पाकिस्तान और दक्षिण एशिया की सीनियर फेलो।

"भारत की विदेश नीति को इसके इतिहास, भूगोल और सांस्कृतिक पहचान द्वारा आकार दिया गया है, और यह क्षेत्रीय स्थिरता, आर्थिक विकास और मानवाधिकारों को बढ़ावा देने की इच्छा को दर्शाता है।" - डेविड एम. मेलोन, संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय के रेक्टर और संयुक्त राष्ट्र के अवर महासचिव।

"भारत की विदेश नीति वैश्विक मंच पर एक प्रमुख खिलाड़ी बनने की इच्छा से प्रेरित है, और संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और इज़राइल जैसे देशों के साथ इसकी रणनीतिक साझेदारी इसकी आर्थिक और सैन्य क्षमताओं को बढ़ाने के प्रयासों को दर्शाती है।" - न्यूयॉर्क के सिटी कॉलेज में राजनीति विज्ञान में राजन मेनन, ऐनी और बर्नार्ड स्पिट्जर चेयर।

"भारत की विदेश नीति मूल रूप से शांति और मित्रता पर आधारित है, और हम हमेशा विवादों को हल करने में बल के उपयोग का विरोध करते रहे हैं।" - अटल बिहारी वाजपेयी, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री।

"भारत की विदेश नीति वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धांत द्वारा निर्देशित होनी चाहिए, विश्व एक परिवार है।" - एस. जयशंकर, भारत के वर्तमान विदेश मंत्री।

"भारत को दुनिया में किसी बड़ी शक्ति की भूमिका निभाने की कोई इच्छा नहीं है, लेकिन भारत हमेशा विकासशील दुनिया का दोस्त रहेगा।" - जवाहरलाल नेहरू, भारत के प्रथम प्रधानमंत्री।

"भारत की विदेश नीति यथार्थवाद पर आधारित होनी चाहिए, जिसका अर्थ है कि हमें अपने हितों को अन्य देशों के हितों के साथ संतुलित करना चाहिए।" - सी. राजा मोहन, भारतीय सामरिक मामलों के विशेषज्ञ।

"भारत एक ऐसा देश है जो विभिन्न सभ्यताओं, संस्कृतियों और क्षेत्रों के बीच एक सेतु हो सकता है, और दुनिया में शांति और सहयोग को बढ़ावा देने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।" - नरेंद्र मोदी, भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री।

ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in January 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

3.0 साहित्य की समीक्षा

चोकसीए जमशेद के. (2012) प्रस्तुत लेख के टाइटल नाम से ही हमें ज्ञात हो रहा है कि लेख ईरान की अर्थव्यवस्था, ईरान के अन्दर की हालत, अव्यवस्था, गड़बड़ी अस्त-व्यस्त को दर्शाता है। प्रस्तुत लेख से हमें पता चलता है कि इस समय ईरान को अपने अन्दर के हालात ठीक करने चाहिए। लगभग 10 साल से तेहरान सिर्फ विदेश की ही राजनीति कर रहा है, उसका ध्यान दुनिया में क्या हो रहा है, दुनिया क्या बोल रही है, कौन पक्ष में है, कौन विपक्ष में, कब दुश्मनों के कटु जवाब का कटुता से ही जवाब देना है आदि की तरफ ही ध्यान है। तेहरान ने हठी रवैया भी अपना रखा है। यदि तेहरान बाहर की दुनिया से निकल कर अपनी दुनिया में अपने देश की हालत को देखे तो समझ में आयेगा कि हम कितने कमजोर हो चुके है।

ग्वासदेवए निकोलस (2012) प्रस्तुत लेख जून 2018-19 को होने जा रही अन्तर्राष्ट्रीय वार्ताकारों की मंत्रणा की एक रूपरेखा प्रस्तुत कर रहा है। लेखक का कहना है कि एक बार फिर अन्तर्राष्ट्रीय वार्ताकार दूसरे दौर की मंत्रणा के लिए तैयार है। ईरान के साथ परमाणु कार्यक्रम को लेकर ये मास्को (रूस) में जून **2018-19** को सम्मेलन होना है। ये सम्मेलन **1962** में मास्को में हुआ परमाणु अप्रसार संधी की याद ताजा रखता है। ऐसे में अमेरिका चाहेगा कि वो ईरान में घूसने से पहले पुख्ता कर ले कि वहां पर क्या चल रहा है, क्या वाकई में परमाणु हथियार बनाये जा रहे है। इस बार अमेरिका ईराक की तरह शर्मीन्दगी दिखाना नहीं चाहता। अमेरिका वार्ता में ईरान को पूर्ण स्वतन्त्र वार्ताकार का दर्जा तो नहीं दे रहा परन्तु यह चाहता है कि जीत कूटनीति से ही तो जाये, ईरान, अमेरिका, संयुक्ता राष्ट्र की बात मान ले।

ओपेक **(2007)** प्रणालीगत और राष्ट्रीय स्तर पर भारत के राजनीतिक विकल्पों ने भी इसे वैश्विक कद बढ़ाने के लिए बहुत कम किया। वैश्विक स्तर पर, 1973 के पहले तेल संकट के मद्देनजर, भारत ने 77 के समूह का नेतृत्व करने के लिए चुना, जो विकासशील देशों का एक समूह है जो वैश्विक आर्थिक व्यवस्था को मौलिक रूप से बदलने की मांग कर रहा है। विडंबना यह है कि जब यह इस गठबंधन का नेता था, तब इसे तेल की कीमतों में वैश्विक वृद्धि से बहुत कम लाभ हुआ और पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (ओपेक) से संसाधन-गरीब विकासशील राष्ट्र के रूप में कोई सार्थक रियायतें प्राप्त करने में विफल रहा।

4. स्मृति एस. पटनायक एक अन्य लेख, मानता है कि भारत का पड़ोस देश की विदेश नीति का मूल है। यह भारत की परिधि की सुरक्षा और स्थिरता से जुड़ा हुआ है, जो पारिवारिक संबंधों और सामाजिक-सांस्कृतिक संबंधों के साथ विविध जातीय समूहों का घर है, जो अक्सर भौतिक सीमाओं को पार करते हैं। उपमहाद्वीप के **1947** के विभाजन से ऐसे कनेक्शन का एक हिस्सा टूट गया था। उत्तर-औपनिवेशिक राज्यों में राष्ट्र-निर्माण की बहुसंख्यकवादी अवधारणा ने साझा सामाजिक-सांस्कृतिक समानता से घृणा की और अपनी राष्ट्रीय पहचान की एक 'विशिष्टता' पर बल दिया जिसने केवल उस अलगाव को तेज किया। यह रवैया अविश्वास और संदेह की विशेषता वाली मानसिकता में बदल गया, जो सहयोग को रोकता है जो इस क्षेत्र की आर्थिक क्षमता को अनुकूलित कर सकता था। अपने पड़ोसियों के साथ अपने सुरक्षा संबंधों पर भारत के अत्यधिक जोर ने इसे अपने दक्षिण एशियाई पड़ोसियों की घरेलू राजनीति और विदेश नीति के उद्देश्यों के प्रति अतिरिक्त सतर्क बना दिया। पड़ोसियों ने महसूस किया कि इस तरह की सतर्कता उनकी संप्रभु विदेश नीति के विकल्पों पर बाधा डालती है और उन्हें अपनी आंतरिक राजनीति को आकार देने में विवश करती है। परिणामस्वरूप पड़ोसी भारत से नाराज हो गए। हालाँकि, भारत की पड़ोस नीति में कई बदलाव हुए हैं - यह धीरे-धीरे सुरक्षा सुनिश्चित करने के साधन के रूप में अपने पड़ोसियों के साथ विकास साझेदारी बनाने की दिशा में सुरक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण से दूर जा रहा है।

5. असीमा सिन्हा का लेख एक विशाल साहित्य पर आधारित है और शायद ही कभी भारत के विदेश मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट का उपयोग किया जाता है। सिन्हा का तर्क है कि अपने **75** वर्षों के दौरान भारत की विदेश नीति की कार्रवाइयाँ किसी भी तरह से अद्वितीय या उपन्यास नहीं हैं, लेकिन उनके किसी भी आकलन में बदलती वैश्विक संरचनाओं का विश्लेषण शामिल होना चाहिए और वे घरेलू अनिवार्यताओं को कैसे प्रभावित करते हैं। विश्लेषणात्मक रूप से, एक 'अंदर-बाहर' परिप्रेक्ष्य, जिसे

आमतौर पर भारत के विचारों और कार्यों पर ध्यान देने के साथ भारत के अध्ययन में तैनात किया जाता है, को 'बाहरी-अंदर' विश्लेषण के साथ जोड़ा जाना चाहिए। इस तरह का बाहरी विश्लेषण भारत को विदेश नीतियों के चार चरणों **[1947-1989; 1999-2000; 2000-2016, 2016-2021]।** वैश्विक आर्थिक और सुरक्षा संरचनाओं, 'मल्टीप्लेक्स' सुविधाओं और 'हथियारों वाली अन्योन्याश्रितता' के बीच बातचीत पर ध्यान देकर वैश्विक पहलुओं का विश्लेषण किया जाना चाहिए, जो शासन कला को अत्यावश्यक और प्रासंगिक बनाते हैं।

4. 0 हाल में हुए बदलाव

हाल के वर्षों में, भारत हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अपने प्रभाव का विस्तार करने और संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और इज़राइल जैसे प्रमुख देशों के साथ अपनी रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने की मांग करते हुए सक्रिय रूप से एक अधिक मुखर विदेश नीति का अनुसरण कर रहा है। भारत ने जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और कोविड-19 महामारी जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने में भी सक्रिय भूमिका निभाई है।

भारतीय विदेश नीति में हाल ही में कई बदलाव हुए हैं जो देश की उभरती रणनीतिक प्राथमिकताओं और वैश्विक आकांक्षाओं को दर्शाते हैं। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं:

1. क्वाड के साथ संवर्धित जुड़ाव: भारत चतुर्भुज सुरक्षा संवाद, या क्वाड में सक्रिय रूप से भाग लेता रहा है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और भारत का एक समूह है। क्वाड का उद्देश्य एक मुक्त और खुले भारत-प्रशांत क्षेत्र को बढ़ावा देना है, और भारत की भागीदारी इस क्षेत्र में चीन की बढ़ती मुखरता का मुकाबला करने के लिए समान विचारधारा वाले देशों के साथ काम करने की इच्छा का संकेत देती है।

2. खाड़ी देशों के साथ घनिष्ठ संबंध: भारत खाड़ी देशों, विशेष रूप से सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और कतर के साथ अपने आर्थिक और सामरिक संबंधों को गहरा कर रहा है। यह आंशिक रूप से भारत की ऊर्जा सुरक्षा आवश्यकताओं से प्रेरित है, लेकिन ईरान के साथ तनाव और मध्य पूर्व की बदलती गतिशीलता के आलोक में इस क्षेत्र के बढ़ते भू-राजनीतिक महत्व को भी दर्शाता है।

3. पड़ोस पर ध्यान: भारत अपने निकटवर्ती पड़ोस, विशेष रूप से दक्षिण एशियाई क्षेत्र पर अधिक जोर देता रहा है। इसमें नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी जैसी पहलें शामिल हैं, जिसका उद्देश्य विकास सहायता और कनेक्टिविटी परियोजनाओं के माध्यम से पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को मजबूत करना है। भारत ने अधिक आर्थिक एकीकरण और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में म्यांमार, बांग्लादेश और अन्य देशों के साथ भी काम किया है।

4. अफ्रीका के साथ अधिक जुड़ाव: भारत महाद्वीप की बढ़ती आर्थिक क्षमता का दोहन करने और चीन के प्रभाव का मुकाबला करने की अपनी इच्छा से प्रेरित होकर अफ्रीकी देशों तक सक्रिय रूप से अपनी पहुंच बढ़ा रहा है। भारत कई अफ्रीकी देशों के साथ बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में निवेश कर रहा है, विकास सहायता की पेशकश कर रहा है और सांस्कृतिक संबंधों को गहरा कर रहा है।

5. डिजिटल डिप्लोमेसी पर फोकस: भारत अपनी कूटनीतिक पहुंच और जुड़ाव बढ़ाने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का तेजी से उपयोग कर रहा है। इसमें ई-विद्याभारती और ई-आरोग्यभारती कार्यक्रम जैसी पहलें शामिल हैं, जिनका उद्देश्य भागीदार देशों में डिजिटल शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा को बढ़ावा देना है। भारत भी अपने प्रवासी भारतीयों के साथ जुड़ने और प्रमुख विदेश नीति के मुद्दों पर अपने संदेश को बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कर रहा है।

5.0 भारत की विदेश नीति के प्रमुख बिंदु

इसमें आर्थिक और सुरक्षा सहयोग से लेकर सांस्कृतिक और कूटनीतिक आउटरीच तक कई तरह के मुद्दे शामिल हैं। भारत की विदेश नीति के कुछ प्रमुख डेटा बिंदु इस प्रकार हैं:

व्यापार: भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, और व्यापार इसकी विदेश नीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। **2020-21** में, भारत का माल और सेवाओं का कुल व्यापार **828.33** बिलियन अमरीकी डॉलर था। देश के शीर्ष व्यापारिक भागीदारों में संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब शामिल हैं।

राजनयिक संबंध: भारत के दुनिया भर के लगभग **190** देशों के साथ राजनयिक संबंध हैं। यह **180** से अधिक दूतावासों और उच्चायोगों के नेटवर्क के साथ-साथ कई वाणिज्य दूतावासों और मानद वाणिज्य दूतावासों का रखरखाव करता है। भारत संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन और अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी सहित कई अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का भी सदस्य है।

सामरिक भागीदारी: भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और फ्रांस सहित दुनिया भर के कई देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी विकसित की है। इन साझेदारियों में रक्षा और सुरक्षा सहयोग से लेकर व्यापार और निवेश तक कई क्षेत्र शामिल हैं।

पड़ोसी पहले नीति: भारत की "पड़ोसी पहले" नीति का उद्देश्य भूटान, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका और मालदीव सहित अपने निकटवर्ती पड़ोसियों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करना है। भारत ने इन देशों को महत्वपूर्ण विकास सहायता प्रदान की है, जिसमें बुनियादी ढांचा, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा जैसे क्षेत्र शामिल हैं।

सॉफ्ट पावर: भारत की सॉफ्ट पावर अपनी विदेश नीति में विशेष रूप से अपनी सांस्कृतिक और शैक्षिक पहुंच के माध्यम से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। देश ने भारतीय संस्कृति और भाषा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दुनिया भर में कई सांस्कृतिक केंद्र और छात्रवृत्ति कार्यक्रम स्थापित किए हैं।

रक्षा खर्च: **2021-22** में **73.6** बिलियन अमरीकी डालर के रक्षा बजट के साथ भारत दुनिया के सबसे बड़े सैन्य खर्च करने वालों में से एक है। रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका और फ्रांस जैसे देशों से उन्नत सैन्य हार्डवेयर के अधिग्रहण के माध्यम से देश ने हाल के वर्षों में अपने सशस्त्र बलों का आधुनिकीकरण किया है।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश **(FDI):** भारत **2020-21** में **64** बिलियन अमरीकी डालर के कुल प्रवाह के साथ दुनिया में **FDI** का सबसे बड़ा प्राप्तकर्ताओं में से एक है। देश के **FDI** के शीर्ष स्रोतों में सिंगापुर, मॉरीशस, संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान शामिल हैं।

मानवीय सहायता और आपदा राहत: भारत का ज़रूरतमंद देशों को मानवीय सहायता और आपदा राहत प्रदान करने का एक लंबा इतिहास रहा है। हाल के वर्षों में, देश ने नेपाल, भूटान, अफगानिस्तान और सीरिया सहित कई देशों को सहायता प्रदान की है। भारत ने अन्य देशों को टीकों के निर्यात सहित, **COVID-19** महामारी की वैश्विक प्रतिक्रिया में भी अग्रणी भूमिका निभाई।

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना: भारत संयुक्त राष्ट्र के शांति अभियानों में सैनिकों का सबसे बड़ा योगदानकर्ता है, जिसके **5,500** से अधिक कर्मचारी वर्तमान में दुनिया भर के विभिन्न मिशनों में सेवा दे रहे हैं। भारत ने **1950** से संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में भाग लिया है और पिछले कुछ वर्षों में **200,000** से अधिक सैनिकों का योगदान दिया है।

सांस्कृतिक कूटनीति: भारत के सांस्कृतिक कूटनीति प्रयासों में भारतीय संस्कृति और भाषा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दुनिया भर में कई भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों की स्थापना शामिल है। देश आईटी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों पर ध्यान देने के साथ अन्य देशों के छात्रों और पेशेवरों को छात्रवृत्ति और प्रशिक्षण कार्यक्रम भी प्रदान करता है।

6.0 निष्कर्ष:

भारत की विदेश नीति बदलती वैश्विक गतिशीलता और देश के बढ़ते आर्थिक और रणनीतिक दबदबे के जवाब में विकसित हो रही है। भारतीय विदेश नीति एक व्यावहारिक दृष्टिकोण की विशेषता है जो प्रतिस्पर्धी हितों को संतुलित करने और बढ़ती आर्थिक और सैन्य शक्ति के रूप में भारत की ताकत का लाभ उठाने का प्रयास करती है। ये डेटा और आंकड़े रक्षा खर्च, आर्थिक संबंध, मानवीय सहायता, शांति स्थापना और सांस्कृतिक कूटनीति सहित भारत की विदेश नीति के विभिन्न पहलुओं में अतिरिक्त अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

References:

1. Aseema Sinha (2022) India in a changing global world: understanding India's changing statecraft and Delhi's international relations, The Round Table, 111:3, 398-411, DOI: 10.1080/00358533.2022.2087992

2. Aurel Sari, "Legal Resilience in an Era of Grey Zone Conflicts and Hybrid Threats," Exeter Centre for International Law Working Paper 2019/1, SSRN, 24 January 2019, https://ssrn. Com/.
3. Charles J. Dunalp, "Lawfare Today: A Perspective," Yale Journal of International Affairs, 2008
4. Devirupa Mitra, "In Charts, a Deep Dive into India's Budget for Diplomacy", The Wire, 02 February 2022,
5. Foreignaffairs.com/?_gl=1*1m7od6c*_ga*otizmjqzntyxlje2odi1njk3ota.*_ga_N9V4J2JY26*MTY4MjU2OTc5OC4xLjAuMTY4MjU2OTc5OC4wLjAuMA
6. Framework Agreement on Cooperation for Development between India and Bangladesh, Ministry of External Affairs, Government of India,
7. Framework Agreement on Cooperation for Development between India and Iran", Ministry of External Affairs, November 2012, https://mea.gov.in/bilateraldocuments
8. Https://pib.gov.in/pressreleaseiframepage.aspx?PRID=1818066
9. Https://polisci.indiana.edu/research/publications/index.html
10. Https://responsiblestatecraft.org/category/reporting
11. Https://thediplomat.com/tag/india-iran-relations
12. https://www.mha.gov.in/sites/default/files/bmintro-1011
13. Https://www.opec.org/opec_web/en/publications/338.htm
14. Https://www.worldpoliticsreview.com/irans-political-chaos-could-put-domestic-foreign-policy-on-hold/
15. *Hunter, Shireen (2010). Iran's foreign policy in the post-Soviet era: resisting the new international order. ABC-CLIO, 2010. ISBN 9780313381942.*
16. *India to sign contract on Chabahar port during PM Narendra Modi's Iran visit". The Economic Times. Retrieved 20 May 2016.*
17. Indian Council of World Affairs(ICWA): Iran-India Relations: Exploring Co-operation in Challenging Times
18. Interconnection with Neighbouring Countries",Ministry of Power, Government of India,available at https://powermin.gov.in/en/content/interconnection-neighbouring-countries
19. Joel P. Trachtman, "Integrating Lawfare and Warfare," Boston College International and Comparative Law Review 39, no. 2 (2016): 267–82